Newspaper : Amar Ujala
Edition: Delhi | Date: 14th November, 2019 | Pg. : 15

बाल मन से सीखने का डर निकाल रही खेल-खेल में पढ़ाई

पहले प्रयास में 75 प्रतिशत क्लास रूम से खत्म हुआ भय

अमर उजाला ब्यूरो

बाल शिक्षा संस्करण

नई दिल्ली। स्कूल को सीखने की जगह माना जाता है, लेकिन यह पढ़ाई केवल किताबों तक सीमित न रहे इसके लिए खेल और गतिविधियों पर आधारित शिक्षण (एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग-एबीएल) शैली को लोकप्रियता मिल रही है। इसका लक्ष्य है बच्चों के मन से कक्षा व पढ़ाई का भय निकालना और सीखने की प्रक्रिया का जिम्मा खुद उन्हीं को सौंपना। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी खेल को हर बच्चे का अधिकार माना है, ऐसे में इसका उपयोग उन्हें पढ़ाने और सिखाने में भी किया जा रहा है।

विभिन्न राज्यों के चुनिंदा सरकारी स्कूलों में यूनिसेफ के सहयोग से एबीएल की पहल की गई है। मूल्यांकन रिपोर्ट में यूनिसेफ ने दावा किया है कि इन स्कूलों की 75 प्रतिशत कक्षाओं में सीखने की प्रक्रिया के प्रति बच्चों का डर निकला है। हालांकि इस प्रयास को पूरी सफलता नहीं मिली, बच्चों को कक्षा में सक्रिय रखने और उन्हें सीखने की प्रक्रिया का जिम्मा देने जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में यह विफल रहा। इसकी प्रमुख वजह शिक्षकों की कम सक्रिय भूमिका को बताया गया। साथ ही शिक्षकों को बेहतर ढंग से एबीएल में प्रशिक्षित कर स्कीम को लागू करने की सिफारिश की गई।

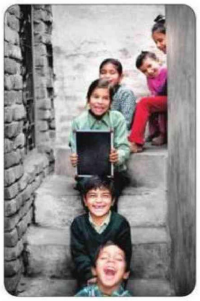

बच्चे जब खेलते हैं तो

- खुद निर्णय लेकर सफल होने का प्रयास करते हैं
- विफल होते हैं तो अपनी गलतियों को सुधारते हैं
- समस्याओं को सुलझाते हैं
- प्रयोग और परीक्षण करते हैं
- नए रास्ते अपनाते हैं
- आपस में बातचीत करते हुए भाषा और नए शब्दों को जानते-समझते हैं

बड़ों की भागीदारी हो तो ज्यादा फायदे

बाल मनोविज्ञानी रॉबर्टा गोलिनकॉफ के अनुसार खेलकूद के जरिए हासिल जानकारी, स्किल और समझ को बच्चे अपनी पढ़ाई में उपयोग करते हैं, भले ही वे अन्य संदर्भों में हों। खास बात है कि अगर यह गतिविधियां बड़ों के साथ आयोजित की जाएं तो वे जल्द सीखते हैं। लेकिन इस दौरान बड़ों को ख्याल रखना होता है कि वे खेल का हिस्सा हैं, वहां बच्चों को नियंत्रित करने के लिए नहीं हैं।

■ खेल बच्चों की भाषा है, उन्हें पूर्व-निर्धारित न रखें

खेलों को बच्चों की भाषा कहा गया है। इस प्रयोग के दौरान उन्हें कुछ चार्ट दिए गए, गीत गाने, चित्रकारी जैसी तय गतिविधियों में शामिल किया गया। इनमें शामिल लिंडा लांगले के मुताबिक यह गलत था। पूर्व नियोजित गतिविधियों को बच्चे खेल नहीं मानते, बल्कि पढ़ाई की तरह लेने लगते हैं। जरूरी है कि बच्चों को खेल आधारित गतिविधियों में बिना किसी पूर्व निर्धारित तरीके से शामिल करें। खुद क्लासरूम में खेल गतिविधियां करने दी जाएं, वे क्या खेलेंगे, कितना खेलेंगे और कैसे खेलेंगे, वही तय करें।